RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

हिन्दी वाक्य रचनाः एक अध्ययन

खुशबू सिंह

सहायक प्रोफेसर, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 January 2019

Keywords
वाक्य, हिन्दी

ABSTRACT

वाक्य ऐसे ध्वनि समूह को कहते हैं जिससे भाव एवं विचार की पूर्णता स्पष्ट होती है। यह एक शब्द से लेकर दस–बीस शब्दों तक का हो सकता है। कभी–कभी एक ही शब्द परिस्थिति विशेष में पूर्ण अर्थ देता है; जैसे–हां, ना आइए, जाइए। इसलिए कुछ विद्वान शब्द को चरम वाक्य कहते हैं। परन्तु इस प्रकार की भाषा से थोड़ा–बहुत ही काम चल सकता है; व्यापक प्रयोग के लिए तो शब्दों को एक विशेष क्रम में संजोना होता है। जब दो या दो से अधिक शब्दों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि उनसे किसी भाव अथवा विचार की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है तो उसे वाक्य कहते है; जैसे – मैं पढ़ रहा हूं। इस सम्पूर्ण वाक्य के एक ही शब्द में परिवर्तन करने से अर्थ बदल जाता है; जैसे– उपरोक्त वाक्य में 'पढ़ रहा' के स्थान पर 'गा रहा', 'सो रहा', 'जा रहा' आदि क्रियाएं लगा देने से वाक्य के भिन्न–भिन्न अर्थ होंगे। इसी प्रकार 'रहा' के स्थान पर 'चुका' शब्द रखने से वाक्य के अर्थ में परिवर्तन हो जाएगा। अब यदि हम वाक्य को परिभाषित करना चाहें तो इस प्रकार कर सकते हैं– वाक्य दो या दो से अधिक शब्दों का एक ऐसी नियमबद्ध एवं अर्थपूर्ण प्रस्तुति है जिससे किसी भाव अथवा विचार की पूर्णता स्पष्ट होती है।

प्रस्तावना

प्रत्येक वाक्य में किसी के विषय में कुछ बात कही जाती है; जैसे– ऊपर के वाक्य में अपने विषय में कहा गया है कि मैं पढ़ रहा हूं। इस दृष्टि से प्रत्येक वाक्य के दो अंग होते हैं– उद्देश्य और विधेय।

उद्देश्य – वाक्य का वह भाग जिसमें किसी के विषय में कुछ कहा जाता है, उद्देश्य कहलाता है, जैसे– ऊपर के वाक्य में मैं। किसी उद्देश्य में केवल कर्ता ही होता है और किसी उद्देश्य में कर्ता के साथ–साथ एक या एक से अधिक कर्तृ विशेषण भी होते हैं; इन्हें कर्ता का विस्तार कहते हैं; जैसे 'दशरथ के पुत्र राम ने राक्षसों का संहार किया था' वाक्य में 'दशरथ के पुत्र राम' उद्देश्य है, 'राम कर्ता और 'दशरथ के पुत्र राम' कर्ता का विस्तार है।

विधेय–

वाक्य का वह भाग जिसमें उद्देश्य के विषय में कुछ कहा जाता है, विधेय कहलाता है, जैसे – ऊपर के वाक्य में 'पढ़ रहा हूं। विधेय का मुख्य शब्द क्रिया होता है। कभी अकेली क्रिया ही विधेय का काम करती है; जैसे 'चले जाओ' और कभी उसके अर्थ को पूर्णरूप से प्रकट करने के लिए अन्य शब्दों की आवश्यकता होती है। ये शब्द निम्नलिखित होते हैं–

1. यदि क्रिया सकर्मक हो तो उसका कर्म,
2. अपूर्ण क्रिया का पूरक,
3. स्थान, समय, प्रयोजन आदि बताने के लिए कुछ शब्द, क्रियाविशेषण अथवा क्रिया का विस्तार।

इस प्रकार विधेय के चार भाग होते हैं– क्रिया, कर्म, पूरक तथा क्रियाविशेषण।

साहित्य की समीक्षा

प्रोफेसर महावीर सरन जैन ने अपने "हिन्दी एवं उर्दू का अद्वैत" शीर्षक आलेख में हिन्दी की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए कहा है कि ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में 'स' ध्वनि नहीं बोली जाती थी। 'स' को 'ह' रूप में बोला जाता था। जैसे संस्कृत के 'असुर' शब्द को वहाँ 'अहुर' कहा जाता था। अफ़ग़ानिस्तान के बाद सिन्धु नदी के इस पार हिन्दुस्तान के पूरे इलाके को प्राचीन फ़ारसी साहित्य में भी 'हिन्द', 'हिन्दुश' के नामों से पुकारा गया है तथा यहाँ की किसी भी वस्तु, भाषा, विचार को 'एडजेक्टिव' के रूप में 'हिन्दीक' कहा गया है जिसका मतलब है 'हिन्द का'। यही 'हिन्दीक' शब्द अरबी से होता हुआ ग्रीक में 'इन्दिके', 'इन्दिका', लैटिन में 'इन्दिया' तथा अंग्रेज़ी में 'इण्डिया' बन गया। अरबी एवँ फ़ारसी साहित्य में भारत (हिंद) में बोली जाने वाली भाषाओं के लिए 'ज़बान–ए–हिन्दी', पद का उपयोग हुआ है। भारत आने के बाद अरबी–फारसी बोलनेवालों ने 'ज़बान–ए–हिन्दी', 'हिन्दी जुबान' अथवा 'हिन्दी' का प्रयोग दिल्ली–आगरा के चारों ओर बोली जाने वाली भाषा के अर्थ में किया। भारत के गैर–मुस्लिम लोग तो इस क्षेत्र में बोले जाने वाले भाषा–रूप को 'भाखा' नाम से पुकराते थे, 'हिन्दी' नाम से नहीं।

भाषा भावाभिव्यक्ति एवं विचार–विनिमय का सांकेतिक साधन है। जहां तक भावाभिव्यक्ति की बात है यह कार्य तो

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संसार के सभी प्राणी किसी–न–किसी रूप में करते हैं। जैसे– कुत्तें भों–भों करके, बिल्ली म्यांउ म्यांउ करके और चूहें चूं–चूं करके। चिड़ियों की चीं–चीं और कोयल की कू–कू किसने नहीं सुनी। छोटे से छोटे जीव में भी यह क्रिया देखी जाती है। चीटियां एक–दूसरे से मुहं मिलाकर न जाने क्या अभिव्यक्त करती हैं, यह सभी ने देखा है। व्यापक अर्थ में संसार के विभिन्न प्राणियों द्वारा प्रयुक्त भावाथिव्यक्ति के इन साधनों–अंग–प्रत्यंगों के संचालन, भाव–मुद्राओं और ध्वनि संकेतों को भाषा कहते हैं। इस अर्थ में संसार के सभी प्राणियों की अपनी–अपनी भाषाएं हैं।

वाक्यों के भेद

अंग्रेजी भाषा की भांति हिन्दी भाषा में भी वाक्यों के अनेक दृष्टियों से भेद किए जाते हैं। इनमें रचना, अर्थ तथा क्रिया की दृष्टि से किए जाने वाले भेद मुख्य हैं। हिन्दी में साहित्यिक दृष्टि से भी वाक्यों के भेद किए जाते हैं।

रचना की दृष्टि से वाक्यों के भेद

रचना की दृष्टि से वाक्यों के तीन भेद होते हैं– सरल, मिश्रित और संयुक्त।

1. सरल वाक्य – जिन वाक्य में केवल एक ही प्रधान क्रिया होती है; उसे सरल वाक्य कहते हैं, जेसे विनोद पुस्तक पढ़ता है।
2. मिश्रित वाक्य – जिस वाक्य में एक से अधिक प्रधान क्रियाएं होती हैं, एक प्रधान उपवाक्य होता है और शेष अधीन अपवाक्य होते हैं, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं; जैसे – सेनानायक की आज्ञा पाते ही सेना ने कूच कर दिया' इस वाक्य में सेना ने कूच कर दिया – प्रधान उपवाक्य है और सेनानायक की आज्ञा पाते ही – अधीन उपवाक्य है।
3. संयुक्त वाक्य – जिस वाक्य में एक से अधिक प्रधान उपवाक्य होते हैं, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं, जैसे सेनानायक की आज्ञा पाते ही सेना ने कूच कर दिया' तथा 'वह सीमा पर पहुंच गई' दो प्रधान उपवाक्य हैं और 'सेनानायक की आज्ञा पाते ही' तथा 'देखते ही देखते' दो अधीन उपवाक्य हैं।

अर्थ की दृष्टि से वाक्यों के भेद

अर्थ की दृष्टि से वाक्यों के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं–

1. विधिवाचक वाक्य – वे वाक्य जिनमें किसी बात के न होने का आभास मिलता है, विधि–वाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे – मैं देहली गया था।
2. निषेधवाचक वाक्य – वे वाक्य जिनमें किसी बात के न होने का आभास मिलता है, निषेधवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे – मैं देहली नहीं गया था।'
3. आज्ञार्थक वाक्य – वे वाक्य जिनसे आज्ञा का आभास होता है, आज्ञा सूचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे – तुम देहली जाओ।'
4. प्रश्नवाचक वाक्य – वे वाक्य जिनमें कुछ जानने की इच्छा प्रकट की जाती है, प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं, जैसे – क्या तुम देहली जाओगे ?
5. विस्मयादि बोधक वाक्य – जिन वाक्यों में हर्ष, शोक अथवा विस्मय प्रकट किया जाता है उन्हें विस्मयादि बोधक वाक्य कहते हैं; जैसे – ओह! तुम देहली गए थे।'
6. इच्छाबोधक वाक्य – जिन वाक्यों में किसी इच्छा की अभिव्यक्ति होती है, उन्हें इच्छाबोधक वाक्य कहते हैं; जैसे – ईश्वर तुम्हे देहली में ही नौकरी दिला दे।'
7. सन्देहवाचक वाक्य – जिन वाक्यों में सन्देह की भावना छिपी होती है, उन्हें सन्देह सूचक वाक्य कहते हैं; जैसे – हो सकता है मुझे देहली जाना पड़े।'
8. संकेतार्थक वाक्य – जिन वाक्यों में किसी भाव का केवल संकेत होता है और उसके साथ कोई शर्त लगी होती है उन्हें संकेतार्थक वाक्य कहते हैं; जैसे – यदि तुम देहली जाओ तो तुम्हें देश–विदेश से व्यक्ति देखने को मिलेंगे।'

क्रिया की दृष्टि से वाक्यों के भेद

1. कर्तृप्रधान वाक्य – वे वाक्य जिनमें कर्ता और कर्म अपने–अपने स्थान पर स्थिर रहते हैं और जिनमें कर्म का होना आवश्यक नहीं होता, कर्तृप्रधान वाक्य कहे जाते हैं; जैसे – 'राकेश पढ़ रहा है।'
2. कर्मवाचक वाक्य – जिन वाक्यों में कर्मपधान क्रिया होती है और कर्म आवश्यक रूप से होता है, उन्हें कर्मवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे – 'विपिन तुलसी कृत रामचरित मानस का पाठ कर रहा है।'
3. भावप्रधान वाक्य – वे वाक्य जिनमें क्रिया प्रधान होती है, भावप्रधान वाक्य कहलाते हैं; जैसे 'उनकी दीन दशा देखते ही वे रो पड़े।'

साहित्यिक दृष्टि से वाक्यों के भेद

उपर्युक्त दृष्टियों के अतिरिक्त साहित्यिक दृष्टि से भी वाक्यों के भेद किए जाते हैं; इनके नाम हैं – संयत, शिथिल और सन्तुलित।

1. संयत वाक्य – वे वाक्य जिनका कोई पद पढ़ने के बाद आगे का पद पढ़ने की इच्छा होती है और जो भावों के स्पष्टीकरण में समर्थ होते हैं, संयत वाक्य कहलाते हैं; जेसे – 'मुझे उस दिन की बात याद है जब मेरे और तुम्हारे पिताजी श्री बद्रीनाथ जी की यात्रा से लौटते समय स्टेशन पर उतरे थे और हम सबने उनका स्वागत किया था।'

RRIJM 2015, All Rights Reserved

2. शिथिल वाक्य – जिन वाक्यों का महत्वपूर्ण भाग सबसे पहले आ जाता है और फिर उस भाव की व्याख्या या पुनरावृत्ति सी होती है, उन्हें शिथिल वाक्य कहा जाता है; जैसे – बिड़ला के पास
1. सन्तुलित वाक्य – इस प्रकार के वाक्यों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि इनमें वाक्यांश आपस में सम्बद्ध रूप से जुड़े रहते हैं और किसी एक वाक्यांश के निकाल देने से भाव अधूरा रह जाता है और प्रत्येक वाक्यांश का अपना अस्तित्व होता है; जैसे – जो सत्य है वही शिव है, जो शिव है वही सत्य है, और जो सत्य एवं शिव है, वही सुन्दर है।

उपसंहार

प्रत्येक भाषा में वाक्य रचना के कुछ नियम होते हैं। कुछ भाषाएं तो ऐसी हैं जिनमें वाक्य रचना के बड़े कठोर नियम हैं और कुछ भाषाएं ऐसी हैं जिनमें वाक्य रचना के पद क्रम में थोड़ा अन्तर किया जा सकता है। हिन्दी दूसरे प्रकार की भाषा है। हिन्दी में वाक्य रचना में पदों के क्रम एवं विभक्यिों के प्रयोग आदि के कोई कठोर नियम नहीं हैं लेकिन व्याकरण सम्मत भाषा की वाक्य रचना के कुछ सामान्य नियम अवश्य हैं। इन नियमों को हम अग्रलिखित पांच वर्गों के अन्तर्गत क्रमबद्ध कर सकते हैं।

पद से यहां तात्पर्य शब्द से है। जब तक कोई शब्द किसी वाक्य का अंश नहीं बनता तब तक वह शब्द कहलाता है और जब वह किसी वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तो उसे उस वाक्य का पद कहते हैं। हिन्दी में पदक्रम के सामान्य नियम निम्नलिखित हैं–

1. हिन्दी के वाक्यों में पदक्रम का सबसे साधारण नियम यह है कि सर्वप्रथम कर्ता तथा उद्देश्य और फिर कर्म तथा पूर्ति और अन्त में क्रिया पद रखा जाता है; जैसे – मैं पुस्तक पढ़ रहा हूं।
2. द्विकर्मक क्रियाओं में गौण कर्म पहले और मुख्य कर्म बाद में आता है; जैसे – मैंने अपने मित्र को कई सुन्दर पुस्तकें भेंट कीं।
3. इनके अतिरिक्त दूसरे कारकों में आनपे वाले शब्द उन शब्दों से पहले आते हैं जिनसे उनका सम्बन्धा रहता है; जैसे – अच्छे बच्चे अच्छी पुस्तकें पढ़ते हैं।
4. वाक्य में कर्ता का विस्तार कर्ता से पहले और क्रिया का विस्तार क्रिया से पहले आता है; जैसे – अच्छे बच्चे अच्छी पुस्तकें पढ़ते हैं।
5. विशेषण प्रायः विशेष्य (संज्ञा अथवा सर्वनाम) से पहले आते हैं; जैसे– वह अच्छा लड़का है।
6. क्रियाविशेषण अथवा क्रियाविशेषण वाक्यांश क्रिया से पहले आते हैं; जैसे – राम का घोड़ा तेज दौड़ता है।
7. सम्बोध्य को वाक्य के आरम्भ में लिखा जाता है; जैसे – बेटे! इधर आओ।
8. प्रश्नवाचक शब्द व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के पहले लगते है; जैसे– विकास प्रातः स्कूल जाता है।

परन्तु कभी–कभी उपरोक्त पद क्रम के अभाव में भी वाक्यों का अर्थ निकल आता है; जैसे–

1. पुस्तक पढ़ रहा हूं मैं।
2. मैंने कई सुन्दर पुस्तकें भेंट की अपने मित्र को।
3. देहली से हावड़ा तक जाती है यह रेलगाड़ी।
4. विद्यालय के प्रधानाचार्य नहीं आ रहे हैं कई दिनों से।
5. लड़का वह अच्छा है।
6. राम का घोड़ा दौड़ता है तेज।
7. इधर आओ, बेटे।
8. रेखा सो रही है क्या?
9. विकास स्कूल प्रातः जाता है

,संदर्भ

1. भारतीय दर्शन–बलदेव उपाध्याय
2. ऋगवेद
3. आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य – डॉ0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल, भूमिका
4. प्रामणिक हिन्दी कोष–रामचन्द वर्मा

RRIJM 2015, All Rights Reserved